Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.38, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, SEPT-OCT, 2019, VOL- 7/53

किशोरावस्था में होने वाली बालक एवं बालिकाओं के व्यवहार–नियंत्रण,संवेगात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

Soni Mishra[1] & Manju[2], Ph. D.

[1]*Research scholar [Home Science], Reg.No.- 67140015, OPJS University, Churu*

[2]*Assistant Professor, Dept. of Home Science, OPJS University, Churu*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

किशोरावस्था में उत्पन्न समस्याएँ स्वभाव से अत्यन्त जटिल एवं गम्भीर होती है।इनका सम्बंध सीधे बालक के समायोजन व उसके व्यक्तित्व विकास के साथ होता है।यदि इन समस्याओ का समाधान शीध्र न किया जाय,तो ये बालक की प्रौढावस्था में भी बनी रहती है। और व्यक्ति फिर उनका समाधान जीवन में कभी नहीं कर पाता है। जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षण या पक्ष हो जिसमें किशोर को किसी प्रकार की समस्या की अनुभूति न हो। परिवार,पाठशाला,शिक्षा,मित्र,मनोरंजन आदि से सम्बन्धित समस्याएँ किशोर का सताया करती है,जिसके परिणामतः किशोर अशांत एवं दुःखी हो जाता है। इसीलिए किशोरावस्था को दुःखी व समस्या की अवस्था कहा जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि किशोर बालक के माता–पिता,अध्यापक तथा अभिभावक उसकी समस्याओं का मूल्यांकन प्रौढ मानदण्ड के आधार पर करते है।

किशोरावस्था की प्रमुख समस्याओं का पता लगाने के सन्दर्भ में मून,पोप,विलियम्स एवं लुईस ने हाईस्कूल व कॉलेज स्तर के किशोरों की समस्याओं का अध्ययन करके निम्न समस्याओं की खोज की जो इस प्रकार है। विधालय की समस्या,परिवार की समस्या,आर्थिक समस्या,व्यक्तिगत समस्या,व्यवसाय की समस्या,शारीरिक परिवर्तन की समस्या, अस्थिरता की समस्या, यौन व्यवहार की समस्या, मानसिक–न्यूनता, संवेगात्मक समस्या एवं नैतिक समस्या आदि।

किशोरावस्था बाल्यकाल तथा यौवन का सन्धिस्थल है। बालक स्वयं से परेशान होता है। और इस परेशानी का कारण वह अपने में हो रहे परिवर्तनों के बजाय समाज तथा परिवार के लोगों को मानता है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत विभिन्न महाविधालयों में अध्ययनरत ग्रामिण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित किशोर बालक एवं बालिकाओं के वास्तविक जीवन से सम्बन्धित कुछ मुख्य समस्याओं यथा उनमें सांस्थिति–नियंत्रण,संवेगात्मक–परिपक्वता एवं सामाजिक–परिपक्वता की स्थिति एवं सामाजिक,पारिवारिक,विधालयीय स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक समायोजन के अध्ययनार्थ शोधकर्ता द्वारा निम्नवत् प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है।

शोध शीर्षकः

किशोरावस्था के बालक एवं बालिकाओं में सांस्थिति–नियंत्रण एवं संवेगात्मक–परिपक्वता तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्यः

किशोरावस्था के बालक एवं बालिकाओं के जीवन में विभिन्न प्रकार की समस्याओं में से प्रमुख समस्या– सांस्थिति–नियंत्रण एवं संवेगात्मक–परिपक्वता से सन्दर्भित प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत निम्नाकिंत उद्देश्य प्रस्तावित किये गये,यथा–

1. ग्रामिण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित किशोरावस्था के बालक एवं बालिकाओं में सांस्थिति–नियंत्रण का अध्ययन करना।
2. ग्रामिण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित किशोरावस्था के बालक एवं बालिकाओं में संवेगात्मक–परिपक्वता का अध्ययन करना।
3. ग्रामिण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित किशोरावस्था के बालक एवं बालिकाओं में सामाजिक–परिपक्वता का अध्ययन करना।

सन्दर्भ सूचीः–

कटारिया डॉ.सुरेन्द्र(2005) "प्रशासनिक सिद्धान्त एवं प्रबन्ध": नेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ,
कपिल, एच.के. (2007) "अनुसंधान विधियाँ", एच.पी. भार्गव बुक हाउस 4/230, कचहरी घाट. आगरा
कपिल, एच.के. (2010) "सांख्यिकी के मूल तत्व" अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–2
गैरेट, ई. हेनरी (1989) "शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग", कल्याणी पब्लिकेशन, नई दिल्ली
भटनागर, डॉ. आर.पी.एवं अग्रवाल, विद्या(2009)"शैक्षिक प्रशासन", लॉयल बुक डिपो,मेरठ
मेहरोत्रा, डॉ. पी.एन.(2010)"भावी शिक्षा एक परिदृश्य", एकलव्य शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय, टोंक

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies